राजस्थानी कथेतर साहित्य परिसंवाद सम्पन्न

कथेतर साहित्य एक स्मृति प्रधान विधा है: प्रोफेसर चारण

विश्व कथेतर साहित्य आपदा की विधा है: प्रोफेसर सत्यनारायण

ओम एक्सप्रेस

बांसवाड़ा। संसार में शासन करने वाली प्रत्येक सत्ता मनुष्य की वैचारिक दृष्टि पर अंकुश लगातार उसकी स्मृति को लोप करना चाहती है. मगर एक रचनाकार उस सत्ता को चुनौती देकर सत्ता की हकीकत उजागर करने के साथ ही समाज की चेतना एवं स्मृति को बचाने का जतन करता है। वास्तव में देखा जाए तो समकालीन राजस्थानी कथेतर साहित्य स्मृति प्रधान सृजन है. यह विचार ख्यातनाम कवि-आलोचक प्रोफेसर (डॉ.) अर्जुनदेव चारण ने साहित्य अकादेमी एवं वागड़ साहित्य एवं कला संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राजस्थानी कथेतर साहित्य विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद में रविवार को स्थानीय बीबीएमएस के सभागार में व्यक्त किए। इस अवसर पर उन्होंने कि जो कथा नहीं है, जो कथा से इतर है वो कथेतर साहित्य है। राष्ट्रीय राजस्थानी परिसंवाद के संयोजक हर्षवर्द्धन सिंह राव ने बताया कि इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रतिष्ठित कवि - कथाकार प्रोफेसर सत्यनारायण ने कहा कि विश्व कथेतर साहित्य आपदा की विधा है।

समकालीन राजस्थानी कथेतर साहित्य भारतीय साहित्य से कमतर नहीं है. राजस्थानी रचनाकार कथेतर विधा को नये शिल्प एवं ईमानदारी से रच रहा जिसमें वो आम पाठक को विशेष रूप से प्रभावित कर रही है। उन्होंने अपने उदबोधन में कहा कि समकालीन राजस्थानी युवा रचनाकार कथेतर विधा में बहुत सराहनीय सृजन कर रहे है। वागड़ साहित्य संस्थान के अध्यक्ष एवं समारोह के विशिष्ट अतिथि महिपालसिंह राव ने कहा कि राजस्थानी भाषा-साहित्य का विपुल साहित्य भण्डार है जिस पर शोध की महती दरकार है। संस्थान सचिव जयसिंह राव ने कहा वागड़ी लोक साहित्य का समृद्ध भंडार है जो हमारी अस्मिता से जुड़ा हुआ है । उदघाटन समारोह के आरम्भ में साहित्य अकादेमी के उप सचिव डॉ.देवेन्द्र कुमार देवेश ने स्वागत उद्बोधन के साथ ही साहित्य अकादेमी द्वारा देश के ग्रामीण क्षेत्र एवं अचल विशेष में किए जाने वाले साहित्यिक कार्यक्रमों की विस्तार से जानकारी दी। सत्र का संचालन हरिश आचार्य ने किया।

साहित्यिक सत्र: प्रतिष्ठित विद्वान माधव नागदा एवं डॉ.गजेसिंह राजपुरोहित की अध्यक्षता में आयोजित दो अलग-अलग साहित्यिक सत्रों में सूर्यकरण सोनी - राजस्थानी डायरी लेखन, चेतन्य मालव-राजस्थानी संस्मरण एवं रेखाचित्र, नेहा गुप्ता- राजस्थानी ललित निबंध तथा हिमेश उपाध्याय - राजस्थानी यात्रा वृत्तांत विषय पर अपना आलोचनात्मक आलेख प्रस्तुत किया. सत्र का संचालन युवा रचनाकार राम पांचाल एवं हेमंत पाठक ने किया।

समापन समारोह: प्रतिष्ठित कवि-कथाकार डॉ. मंगत बादल ने अपने अध्यक्षीय उदबोधन में कहा कि भाषा सदैव परिवर्तनशील है मगर राजस्थानी रचनाकार को राजस्थान प्रदेश की सभी बोलियों को बोलने-समझने में कोई दिक्कत नहीं है।